दीवार

निर्देशक	यश चोपड़ा
निर्माता	गुलशन राय
लेखक	सलीम खान, जावेद अख्तर
पटकथा	सलीम खान, जावेद अख्तर
अभिनेता	अमिताभ बच्चन, शशि कपूर, निरूपा रॉय, नीतू सिंह, परवीन बॉबी, इफ्तेखार
संगीतकार	राहुल देव बर्मन साहिर लुधियानवी (गीत)
प्रदर्शन तिथियाँ	1 जनवरी 1975
देश	भारत
भाषा	हिन्दी

दीवार 1975 में बनी हिन्दी भाषा की फिल्म हैं। यश चोपड़ा निर्मित दीवार हिन्दी सिनेमा की सबसे सफलतम फिल्मों में से एक है जिसने अमिताभ को 'एंग्री यंग मैन' के खिताब में स्थापित कर दिया। इस फिल्म ने अमिताभ के करियर को नयी बुलंदियों पर पहुँचा दिया। कहा जाता है की फिल्म की कहानी अंडरवर्ल्ड डॉन हाजी मस्तान के जीवन पर आधारित है और अमिताभ बच्चन ने यही किरदार निभाया है। फिल्म की कहानी है दो भाईयों की कहानी है जो बचपन में अपने और अपने परिवार पर अत्याचारों को झेलकर जिंदगी में दो अलग-अलग रास्ते चुनते हैं, जो दोनों के बीच में एक दीवार खड़ी कर देते हैं।

दीवार 1970 के दशक की महत्त्वपूर्ण फिल्म है। इस फिल्म के केंद्र में 1970 के आस-पास का मुंबइया अपराध है। तस्करी तथा स्मगलिंग का दौर

Scanned by TapScanner

जिसमें कई तरह के रूप देखने को मिल रहे थे। दीवार में उन्हें दिखाया। अमिताभ बच्चन इस फिल्म के नायक है। एंग्रीमैन की भूमिका में हैं। उस समय मजदूर आंदोलन की अधिकता थी। इस आन्दोलन को इसी फिल्म में दिखाया गया है। भारत जैसे देश में बेरोजगार युवकों की स्थिति को सभी जानते हैं उस बेरोजगारी का सटीकरूप इस फिल्म में विद्यमान है। रोजगार के अभाव में किस तरह लोग गैरकानूनी कार्यों से लिप्त हो जाते हैं। अपराध ही इस फिल्म का आधार हैं। इसका समय 1970 से लेकर 1975 तक व्याप्त अपराध की स्थिति का चित्रांकन करना है। अपराध को फिल्मों में यथार्थवादी ढंग से उतारा गया है।

नवीन पाठ्यक्रम में फिल्मों को तकनीक के आधार पर अन्तर स्पष्ट करना है। किस प्रकार बदलते समय में फिल्म के निर्माण से लेकर अन्तराणविक पक्ष में परिवर्तन हुआ है। तकनीक का बेहतरीन उपयोग किया गया है। कैमरे की भूमिका प्रमुख है। कहाँ शॉट्स लेना है। कैसे लेना हैं। Zoom in/out का सहारा लेकर फिल्म को रोचक बनाने का प्रयास किया गया है। कही पर फोकस, कही इफेक्ट तो कही एनीमेशन का सहरा लेकर दृश्य फिल्माएँ गये है। उजड़े गाँवों से लेकर भयावह दृश्य तक फिल्माएँ जाते है। आग, बाढ़ की स्थिति को एनीमेशन के द्वारा दिखाया जाता है। तकनीक सहारे की तुफान को दिखाया जाता है। साउण्ड इफेक्ट का प्रभाव भी देखने को मिलता है। दृश्य के सौन्दर्य को तकनीक के माध्यम से जीवन्त बनाया जाता है। आज डिजिटल टेक्नॉलाजी का अधिक इस्तेमाल किया जाता है। फिल्मों के पोस्टर अत्यन्त रोचक व प्रभावी होते हैं। साउण्ड इफेक्ट के जरीए काँच का टूटना, विध्वंसकारी दृश्य प्रभावी बनाए गए हैं। पिक्चर क्वालिटी उत्तम है। ध्वनि Background में थी। पटकथा बहुत ही सटीक था।

पटकथा

आनंद वर्मा (सत्यन कप्पू) मजदूर संघ का नेता है और मजदूरों के हक के लिए फैक्ट्री मालिकों से लड़ाई करता है, पर फैक्ट्री मालिक उसे, उसके परिवार को जान से मारने की धमकी देते है, जिससे डरकर आनंद उनकी बात मान लेता है। मजदूर इससे गुस्साकर आनंद पर जानलेवा हमला कर देते है। आनंद घर छोड़कर भाग जाता है। मजदूर, विजय (आनंद के बेटे) के हाथ पर 'मेरा बाप चोर है' लिख देते हैं। मजदूरों से परेशान होकर आनंद की बीवी सुमित्रा (निरूपमा रॉय) अपने बच्चों, विजय (अमिताभ बच्चन) और रवि (शशि

Scanned by TapScanner

कपूर) के साथ बंबई चली जाती है। अपने बच्चों को पालने के लिए सुमित्रा मजदूरी करने लगती है। विजय भी पढ़ाई छोड़कर मजदूरी करने लगता है ताकि उसका भाई रवि पढ़ सके। बड़े होकर विजय एक फैक्ट्री में मजदूर बन जाता है और रवि एक पुलिस अफसर। विजय को लगता है कि दुनिया उसी की सुनती है जिसके पास पैसा है और सच्चाई के रास्ते पर चलने से सिर्फ नाकामी मिलती है। पर रवि को सच्चाई और कानून पर पूरा विश्वास होता है। पर उसे कानून और भाई में से किसी एक को चुनना है। पैसे कमाने की चाह में विजय सोने की तस्करी करने लगता है और फिर शुरू होती है दोनों भाईयों में तकरार की कहानी।

फिल्म के संवाद बहुत ही दमदार हैं और आज तक इस्तेमाल किये जाते हैं। फिल्म के गाने दर्शकों ने पसंद किए हैं और फिल्म की कहानी दर्शकों को कुर्सी से बाँधे रखती है।

कुछ प्रसिद्ध संवाद है:

"मेरा बाप चोर है"

"आज मेरे पास बंगला है, गाड़ी है, बैंक बॅलेन्स है, तुम्हारे पास क्या है–मेरे पास माँ है"

"मैं आज भी फेंके हुए पैसे नहीं उठाता"

"ये चाबी अपनी जेब में रख ले पीटर, अब ये ताला मैं तेरी जेब से चाबी निकाल कर ही खोलूँगा"

"पीटर तुम मुझे वहाँ ढूंढ रहे हो और मैं तुम्हारा यहाँ इंतज़ार कर रहा हूँ।"

निर्देशक: यश चोपड़ा

निर्माता: गुलशन राईक

कथा लेखक: जावेद अख्तर, सलीम खान

मुख्य कलाकार

- अमिताभ बच्चन - विजय वर्मा
- शशि कपूर - रवि वर्मा
- निरूपा रॉय - सुमित्रा देवी, रवि व विजय की माँ
- सत्येन्द्र कपूर - आनन्द वर्मा, रवि व विजय के पिता
- नीतू सिंह - लीना नारंग
- परवीन बॉबी - अनिता
- इफ्तेखार - मुल्कराज धाबडिया
- मनमोहन कृष्णा - डीसीपी नारंग

Scanned by TapScanner